Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 3

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग

आरंभिक समाज (600 ई.पू.-600 ई.)

भाग - 9

प्रीतेश जोशी

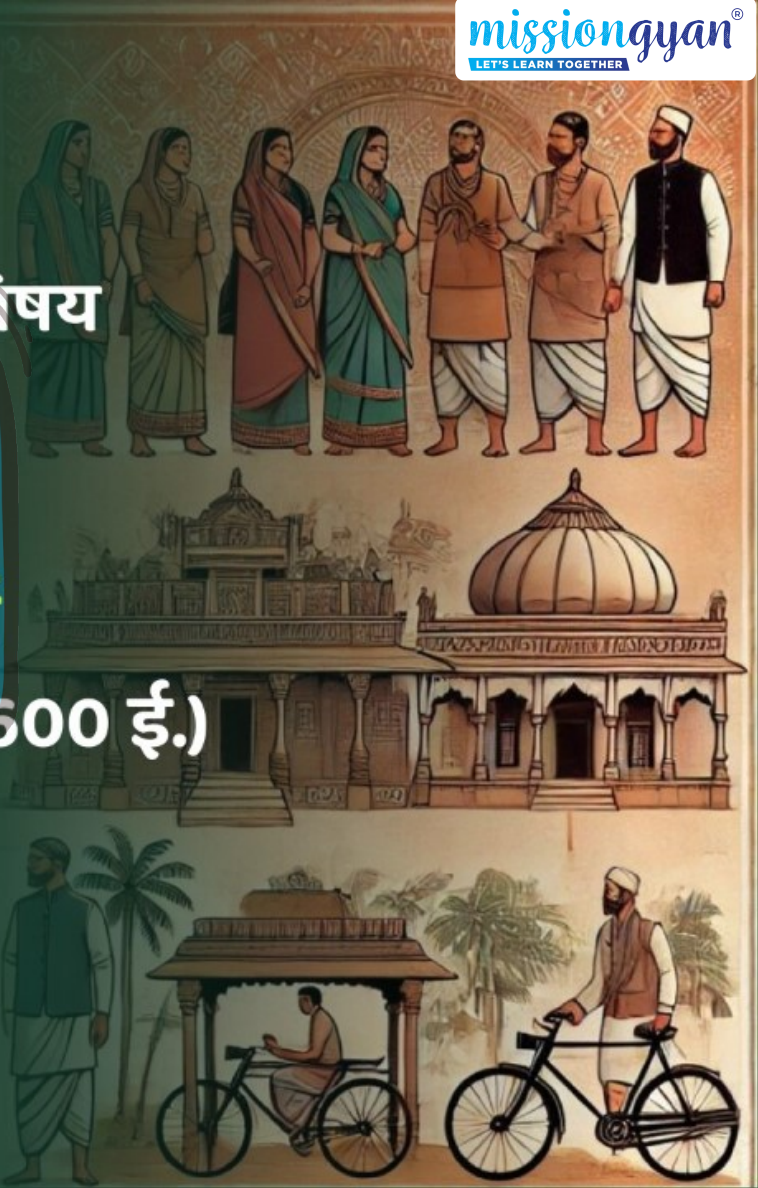

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सामाजिक अनुबंध

बौद्ध	ब्राह्मणीय
वर्ण ✗	वर्ण ✓
दैवीय ✗	दैवीय ✓
युक्तिपरक	पुरुष सुक्त

4. किन मायनों में सामाजिक अनुबंध की बौद्ध अवधारणा समाज के उस ब्राह्मणीय दृष्टिकोण से भिन्न थी जो 'पुरूष सूक्त' पर आधारित थी।

उत्तर : ब्राह्मणों के अनुसार वर्ण व्यवस्था एक दैवीय व्यवस्था थी इस मान्यता को प्रमाणित करने के लिए ब्राह्मण ऋग्वेद के पुरूष सूक्त के अनुसार बतातें है कि चार वर्णों की उत्पत्ति आदि मानव पुरूष से हुई है। उसके मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, जंघा से वैश्य तथा पैर से शूद्र की उत्पत्ति हुई है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

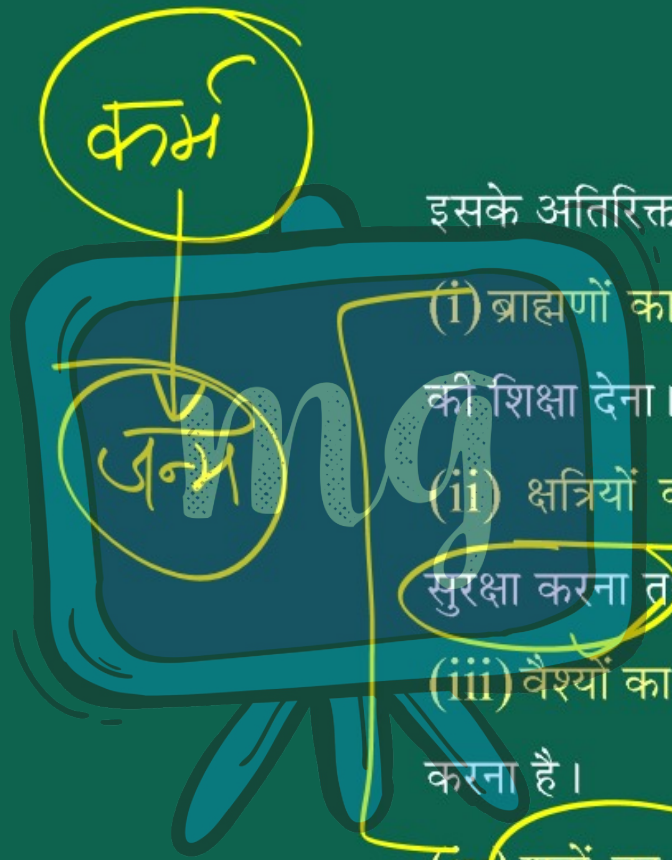

इसके अतिरिक्त धर्मसूत्र एवं धर्मशास्त्रों के अनुसार

(i) ब्राह्मणों का कार्य – अध्ययन करना तथा वेदों की शिक्षा देना।

(ii) क्षत्रियों का कार्य – युद्ध करना, राज्य की सुरक्षा करना तथा न्याय करना व शासन करना है।

(iii) वैश्यों का कार्य – कृषि, गोपालन तथा व्यापार करना है।

(iv) शूद्रों का कार्य – तीनों उच्च वर्णों की सेवा करना है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

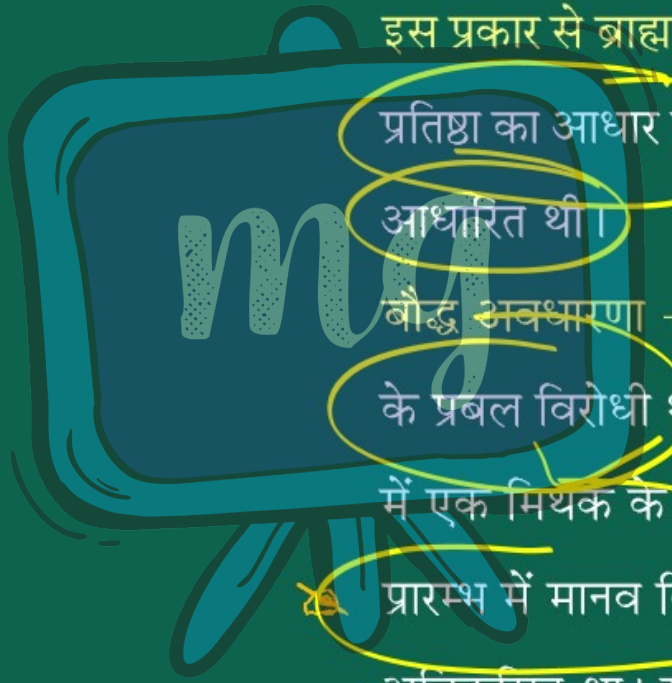

इस प्रकार से ब्राह्माणीय – परंपरा के अनुसार सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार जन्म था। क्योंकि वर्ण व्यवसाय जन्म आधारित थी।

बौद्ध अवधारणा – बौद्ध जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था के प्रबल विरोधी थे। बौद्ध ग्रंथ सुत्त पिटक नामक ग्रंथ में एक मिथक के अनुसार –

प्रारम्भ में मानव विकसित नहीं थे। वनस्पति जगत भी अविकसित था। सभी जीव शांति से निर्बाध लोक में रहते थे और प्रकृति से उतना ही ग्रहण करते थे जितनी एक समय के भोजन की आवश्यकता होती थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

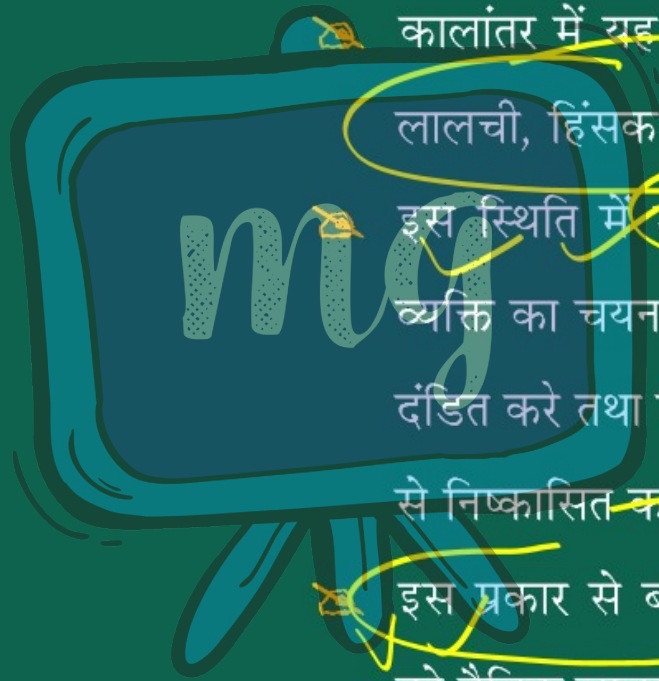

- कालांतर में यह व्यवस्था पतनशील हुई तथा मनुष्य लालची, हिंसक तथा कपटी हो गये।
- इस स्थिति में उनहोंने विचार किया कि एक ऐसे व्यक्ति का चयन करें जो न्यायप्रिय हो, अपराधी को दंडित करे तथा निष्कासित किये जाने वाले को राज्य से निष्कासित करे।
- इस प्रकार से बौद्ध अवधारणा सामाजिक व्यवस्था को दैविक व्यवस्था नहीं मानती है।
- बौद्धों ने जन्म आधारित प्रतिष्ठा को अस्वीकार किया तथा बौद्ध व्यवस्था में सभी वर्गों का समान आदर था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

5. निम्नलिखित अवतरण महाभारत से हे जिसमें ज्येष्ठ पांडव युधिष्ठिर दूत संजय को संबोधित कर रहे हैं :

संजय धृतराष्ट्र गृह के सभी ब्राह्मणों और मुख्य पुरोहित को मेरा विनीत अभिवादन दीजियेगा। मैं गुरू द्रोण के सामने नतमस्तक होता हूं.... मैं कृपाचार्य के चरण स्पर्श करता हूं.... (और) कुरू वंश के प्रधान भीष्म के।

मैं वृद्ध राजा (धृतराष्ट्र) को नमन करता हूं। मैं उनके पुत्र दुर्योधन ओर उनके अनुजों के स्वास्थ्य के बारे में पूछता हूं तथा उनको शुभकामनाऐं देता हूं... मैं उन

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

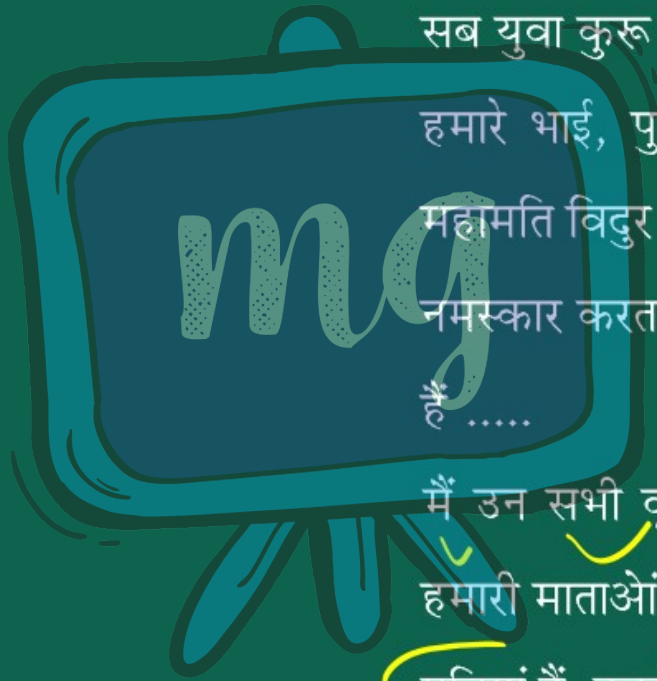

सब युवा कुरू योद्धाओं का अभिनन्दन करता हूं जो हमारे भाई, पुत्र और पौत्र हैं ... सर्वोपरि मैं उन महामति विदुर को (जिनका जन्म दासी से हुआ है) नमस्कार करता हूं जो हमारे पिता व माता के सदृश हैं .....

मैं उन सभी वृद्धा स्त्रियों को प्रणाम करता हूं जो हमारी माताओं के रूप में जानी जाती हैं। जो हमारी पत्नियां हैं, उनसे यह कहियेगा कि ''मैं आशा करता हूं कि वे सुरक्षित हैं'' मेरी ओर से उन कुलवधुओं का जो उत्तम परिवारों में जन्मी हैं और बच्चों की

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



माताऐं हैं, अभिनन्दन कीजियेगा तथा हमारी पुत्रियों का आलिंगन कीजियेगा.. सुंदर, सुगंधित, सुवेशित गणिकाओं को शुभकामनाऐं दीजिऐगा। दासियों और उनकी संतानों तथा वृद्ध, विकलांग और असहाय जनों को मेरी ओर से नमस्कार कीजियेगा..... ।

इस सूची को बनाने के आधारों की पहचान कीजिए.... उम्र, लिंग, भेद व बंधुत्व के संदर्भ में। क्या कोई अन्य आधार भी है? प्रत्येक श्रेणी के लिए स्पष्ट कीजिए कि सूची में उन्हें एक विशेष स्थान पर क्यों रखा गया है?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

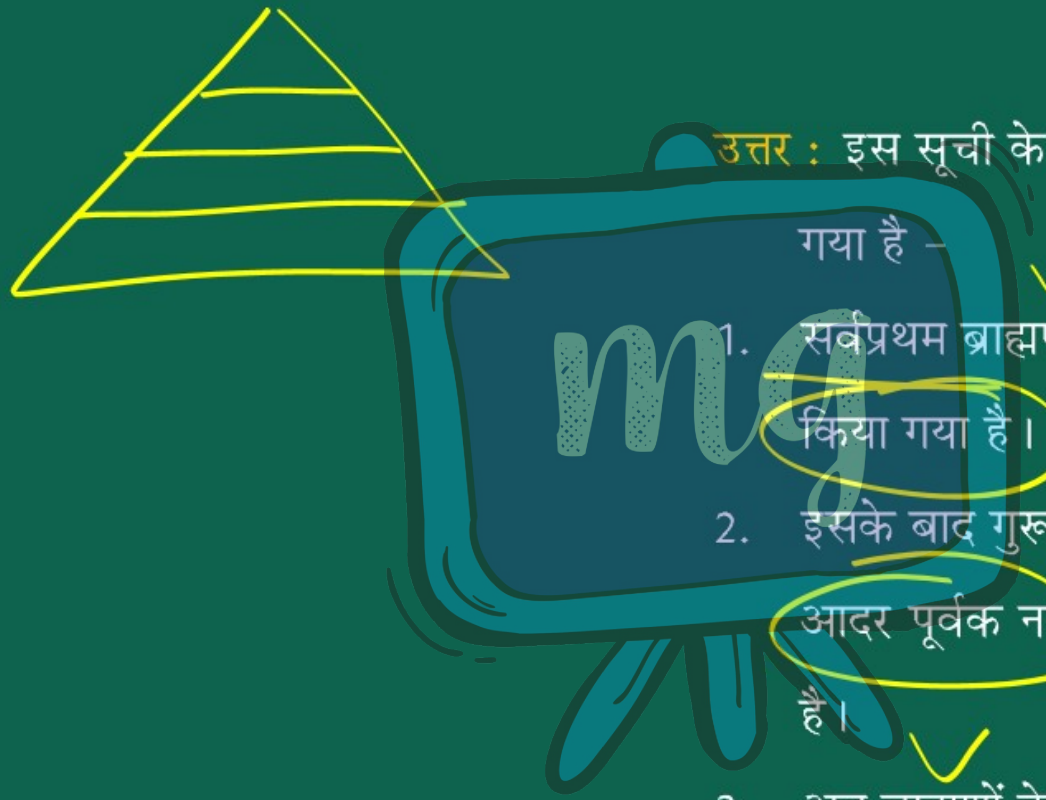

उत्तर : इस सूची के निर्माण में निम्न बातों का ध्यान रखा गया है –

1. सर्वप्रथम ब्राह्मणों एवं मुख्य-पुरोहित का अभिवादन किया गया है।
2. इसके बाद गुरूओं – गुरू द्रोण व कृपाचार्य के प्रति आदर पूर्वक नत-मस्तक व चरण स्पर्श किया गया है।
3. अब ब्राह्मणों के पश्चात् कुरू वंश के प्रधान व उम्र में सबसे बड़े भीष्म पितामह का सम्मान किया गया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

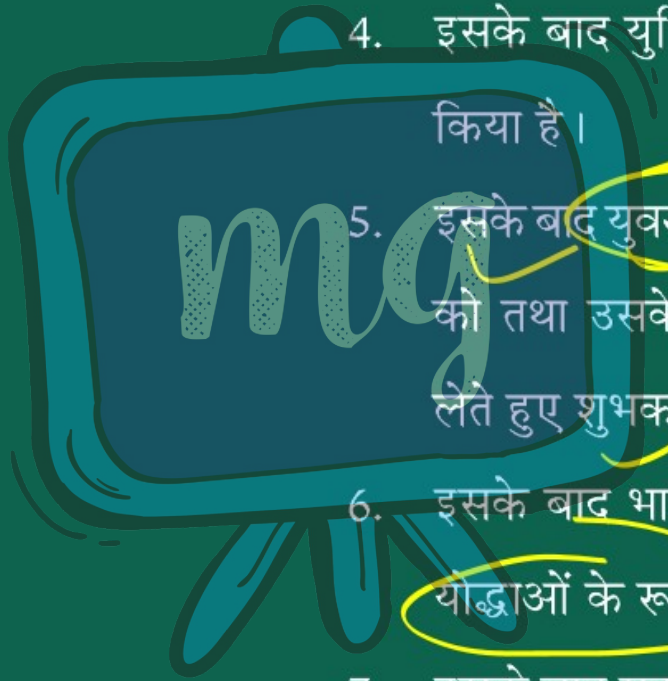

4. इसके बाद युधिष्ठिर ने वृद्ध राजा धृतराष्ट्र को नमन किया है।
5. इसके बाद युवराज का स्थान प्रमुख मानते हुए दुर्योधन को तथा उसके अनुजों के स्वास्थ्य की जानकारी लेते हुए शुभकामनाऐं दी हैं।
6. इसके बाद भाई, पुत्र और पौत्रों को को युवा कुरू योद्धाओं के रूप में अभिनन्दन किया गया है।
7. इसके बाद महामति-विदुर का अभिनंदन करते हुए नमस्कार किया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

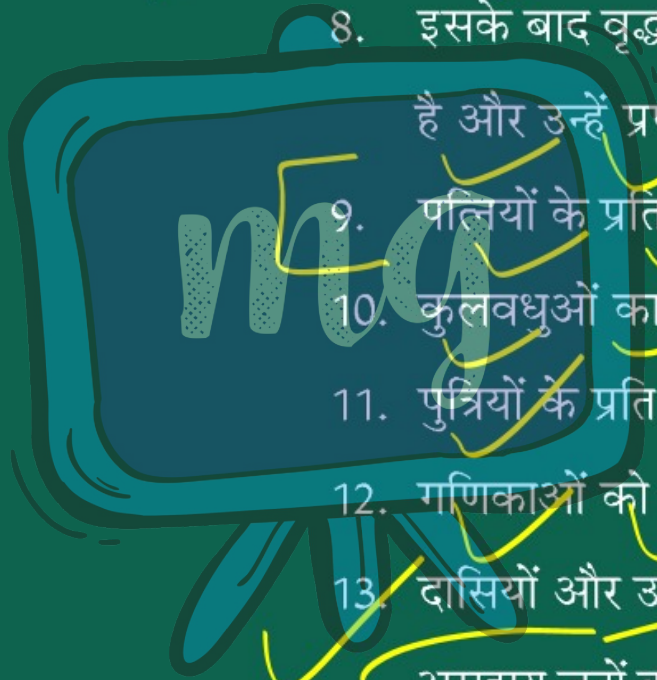

8. इसके बाद वृद्धा स्त्रियों के प्रति सम्मान प्रकट किया है और उन्हें प्रणाम किया है।
9. पत्नियों के प्रति सुरक्षित होने की कामना की गई है।
10. कुलवधुओं का अभिनन्दन किया गया है।
11. पुत्रियों के प्रति अपना स्नेह प्रकट किया है।
12. गणिकाओं को शुभ कामनाऐं दी हैं।
13. दासियों और उनकी संतानों तथा वृद्ध, विकलांगों व असहाय जनों का ध्यान रखते हुए उनको भी नमस्कार किया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. महाभारत एक वृहद् और संपूर्ण ग्रंथ है, चर्चा करें।

6. भारतीय साहित्य के प्रसिद्ध इतिहासकार मौरिस विंटरविट्ज ने महाभारत के बारे में लिखा था कि : "चूंकि महाभारत सम्पूर्ण साहित्य का प्रतिनिधित्व करता है .... बहुत सारी और अनेक प्रकार की चीजें इसमें निहित हैं .....(वह) भारतीयों की आत्मा की अगाध गहराई को एक अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है।" चर्चा कीजिए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

500 ई.पू. — 500 ई.

'सूत'

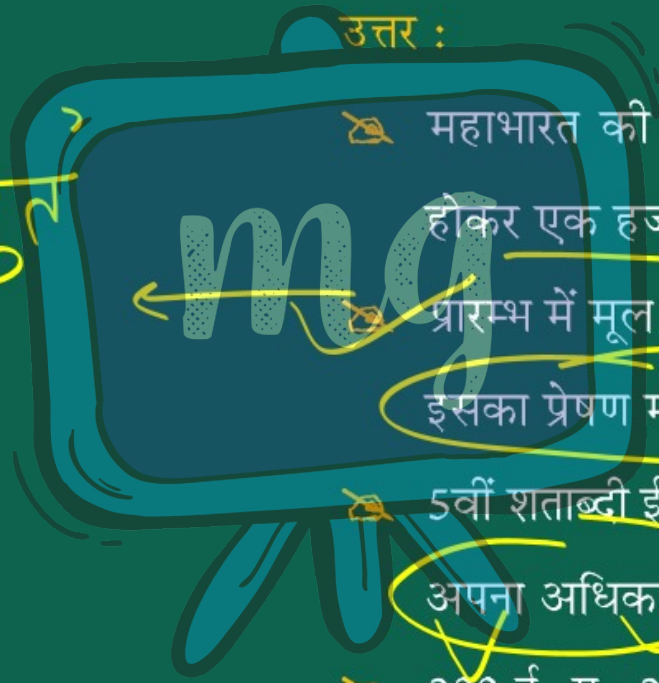

उत्तर :

- महाभारत की रचना लगभग 500 ई.पू. से प्रारम्भ होकर एक हजार वर्षों तक चलती रही।
- प्रारम्भ में मूल कथा के रचयिता भाट-सारथी थे तथा इसका प्रेषण मौखिक रूप से होता रहा।
- 5वीं शताब्दी ई.पू. से ब्राह्मणों ने इस कथा परंपरा पर अपना अधिकार कर लिया और इसे लिखा।
- 200 ई. पू.-200 ई. के बीच जब विष्णु देवता की आराधना प्रभावी हो रही थी तब इसके महत्वपूर्ण नायक श्रीकृष्ण को विष्णु का रूप बताया जा रहा था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- 200–400 ई. के बीच मनुस्मृति से वृहत् उपदेशात्मक प्रकरण महाभारत में जोड़े गये।
- इस सब परिवर्धनों के कारण यह ग्रंथ जो प्राथमिक रूप में 10000 से भी कम श्लोकों का था बढ़कर 1 लाख श्लोकों का हो गया।
- साहित्यिक परंपरा में इस वृहत रचना के रचयिता ऋषिव्यास को ही माना गया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Ekalbya

इसकी विशेषताओं को देखते हैं :-

1. भाषा :- इस महाकाव्य का मूल पाठ संस्कृत में है लेकिन इसकी संस्कृत वेदों व प्रशस्तियों की संस्कृत सरल है।

2. विषयवस्तु :- इतिहासकार महाभारत की विषयवस्तु को 2 शीर्षकों में रखते हैं –

(i) आख्यान : कहानियों का संग्रह है।

(ii) उपदेशात्मक : सामाजिक आचार–विचारों के मानदंडों का चित्रण है।

इतिहासकारों का मानना है कि महाभारत प्रारम्भ में एक नाटकीय कथानक था जिसमें उपदेशात्मक अंश बाद में जोड़े गये।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

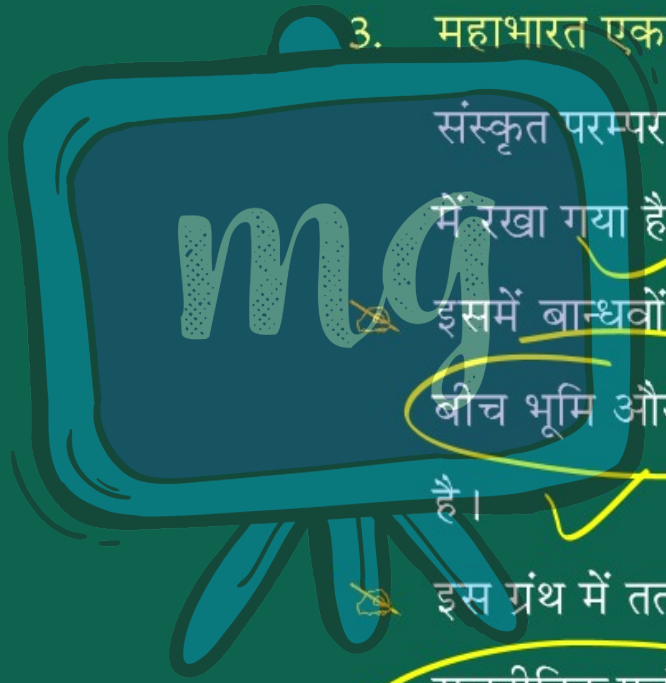

3. महाभारत एक 'इतिहास' या ऐतिहासिक ग्रंथ :-

संस्कृत परम्परा में महाभारत को 'इतिहास' की श्रेणी में रखा गया है।

इसमें बान्धवों के दो दलों कौरवों एवं पांडवों के बीच भूमि और सत्ता को लेकर हुए युद्ध का वर्णन है।

इस ग्रंथ में तत्कालीन धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक अवस्थाओं का पूर्ण विवरण है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

4. भारतीय ज्ञान का विश्व कोष :- महाभारत के आदिपर्वन को धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र, नीतिशास्त्र तथा मोक्षशास्त्र कहा गया है।

5. महाभारत एक 'नीतिबोध' :- भीष्म का राजनीति एवं धर्म के विभिन्न पक्षों पर लम्बा प्रवचन है। विदुर का भी नीति कारकों में महत्वपूर्ण स्थान है।

6. महाभारत कालीन समाज :- वर्ण व्यवस्था सुदृढ़ थी तथा वर्ण 4 थे – (i) ब्राह्मण (ii) क्षत्रिय (iii) वैश्य (iv) शूद्र

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

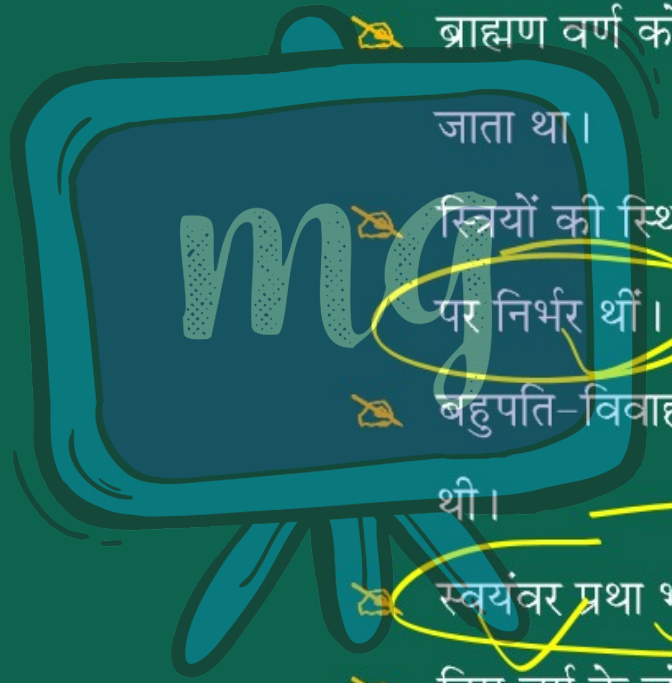

- ब्राह्मण वर्ण को सर्वश्रेष्ठ तथा शूद्रों को निम्नतर माना जाता था।
- स्त्रियों की स्थिति अधिक उच्च नहीं थी। वे पुरूषों पर निर्भर थीं।
- बहुपति-विवाह तथा बहुपत्नी विवाह पद्धति प्रचलित थी।
- स्वयंवर प्रथा भी प्रचलित थी।
- निम्न वर्ग के लोगों को (जैसे – निषाद) शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

7. दार्शनिक महत्व :-

- महाकाव्य का उपदेशात्मक अंश 'भगवत गीता' है।
- इसमें ज्ञान, भक्ति तथा कर्म का सुंदर समन्वय है तथा इसमें बताया है कि ज्ञान योग, भक्ति योग तथा कर्म योग द्वारा ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

8. महाभारत में आदर्श :-

- विदुर एक उच्च कोटि के विद्वान थे वे धृतराष्ट्र को नीतिशास्त्र एवं धर्मशास्त्र की सलाह देते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

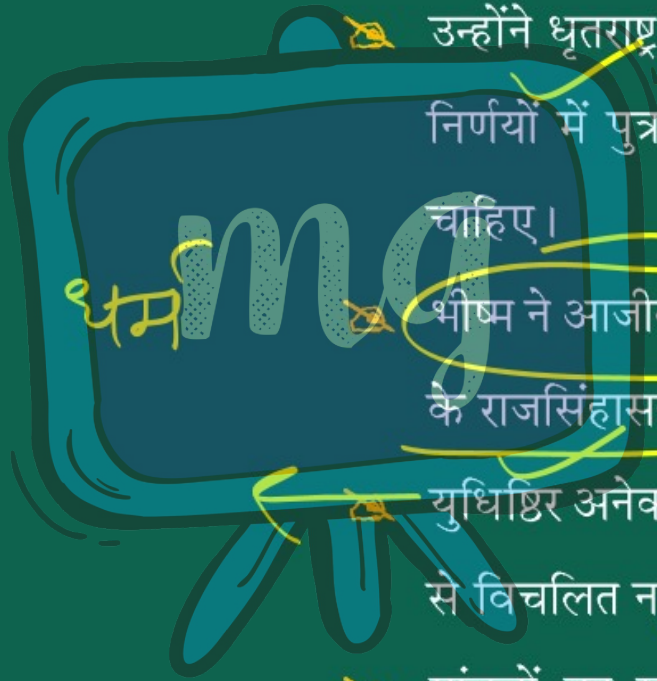

- उन्होंने धृतराष्ट्र से कहा था कि राजा होते हुए उनके निर्णयों में पुत्र की महत्वाकांक्षाऐं आड़े नहीं आनी चाहिए।
- भीष्म ने आजीवन अपना वचन निभाते हुए हस्तिनापुर के राजसिंहासन से बंधे रहे।
- युधिष्ठिर अनेक कष्ट सहन करते हुए भी धर्म के मार्ग से विचलित नहीं हुए और वे धर्मराज कहलाये।
- पांडवों का माता-पिता, गुरूओं, ब्राह्मणों, वृद्धों, असहायों के प्रति प्रेम एवं आदर भी आदर्श सूचक था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- द्रोपदी भी एक आदर्श नारी के रूप में चित्रित की गयी है।

9. साहित्यिक महत्व :-

- महाकाव्य 1 लाख श्लोकों वाला प्राचीनतम ग्रंथ है।
- वीर रस के साथ साथ श्रंगार रस भी मिलते हैं।
- यह अनेक उपमाओं, अलंकारों एवं छन्दों से भरा हुआ है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

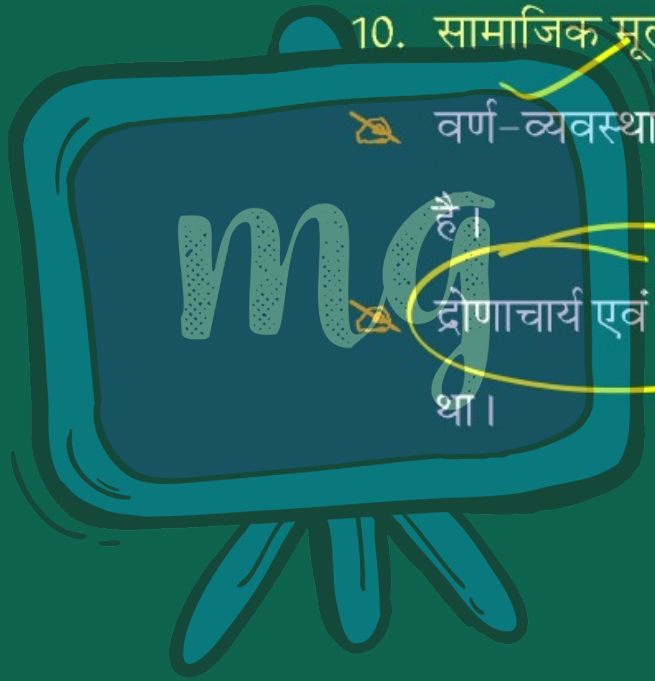

10. सामाजिक मूल्य :-

- वर्ण-व्यवस्था के साथ साथ कर्म भी प्रधान माना गया है।
- द्रोणाचार्य एवं कृपाचार्य में जन्मजात वर्ण का भी महत्व था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

11. धार्मिक जीवन :-

- इस काव्य के अनुसार इस काल में विष्णु, ब्रह्मा, शिव आदि अनेक देवी-देवताओं की उपासना की जाती थी।
- इस काल में यज्ञ, अनुष्ठानों का महत्व था।
- अतः उपर्युक्त वर्णन से यह प्रतीत होता है कि मौरिस-विन्टरविट्ज का कथन सही है कि

"महाभारत सम्पूर्ण साहित्य का प्रतिनिधित्व करता है।"

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

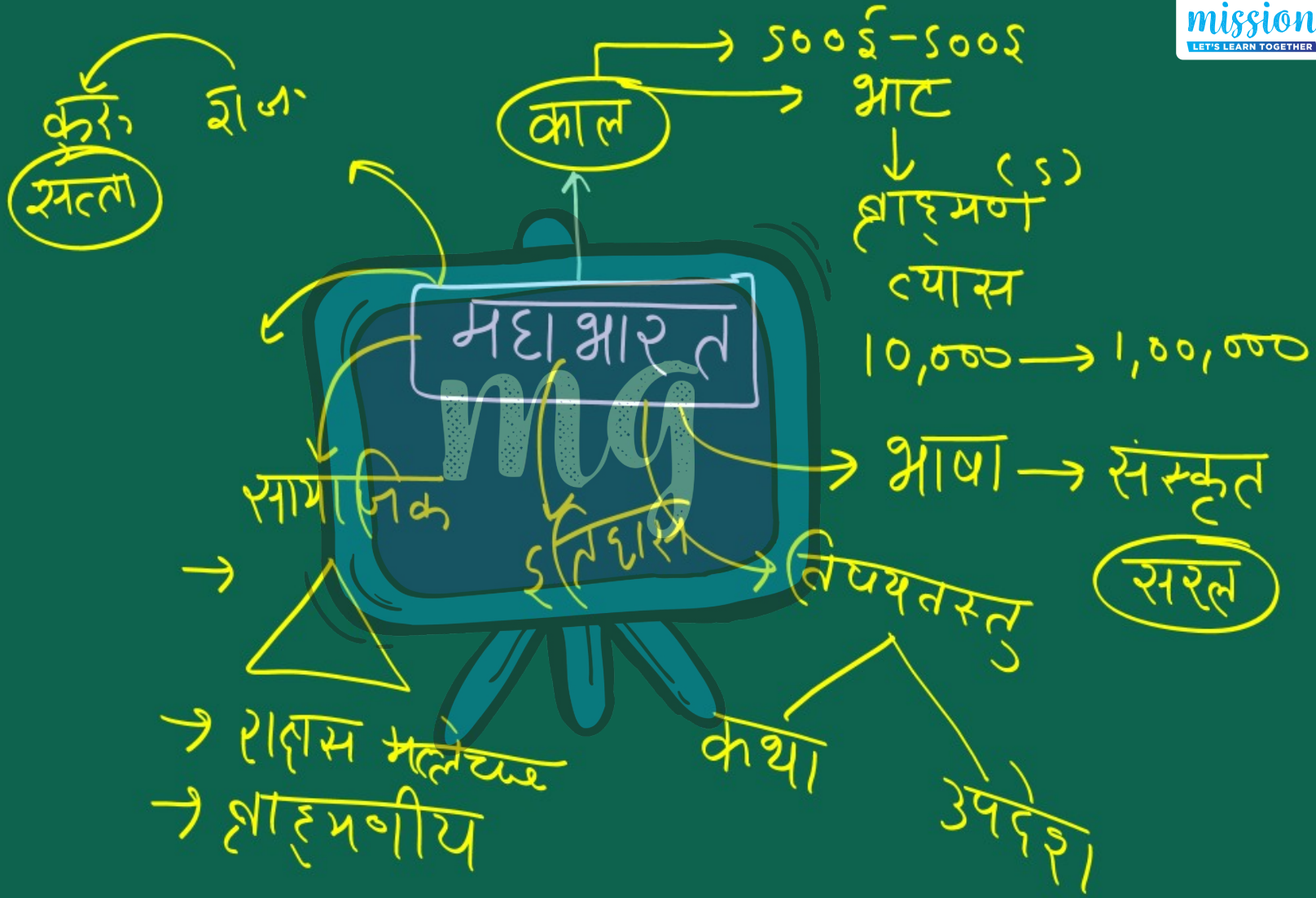

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

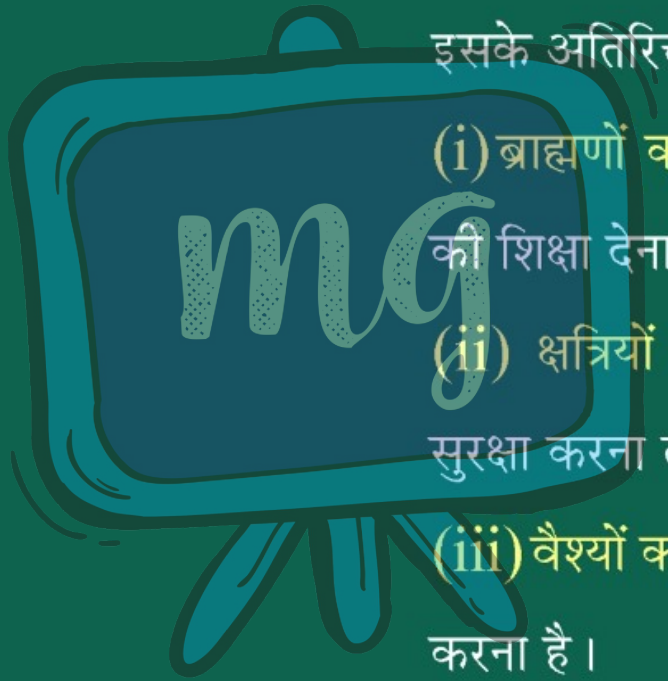

इसके अतिरिक्त धर्मसूत्र एवं धर्मशास्त्रों के अनुसार

(i) ब्राह्मणों का कार्य – अध्ययन करना तथा वेदों की शिक्षा देना।

(ii) क्षत्रियों का कार्य – युद्ध करना, राज्य की सुरक्षा करना तथा न्याय करना व शासन करना है।

(iii) वैश्यों का कार्य – कृषि, गोपालन तथा व्यापार करना है।

(iv) शूद्रों का कार्य – तीनों उच्च वर्णों की सेवा करना है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

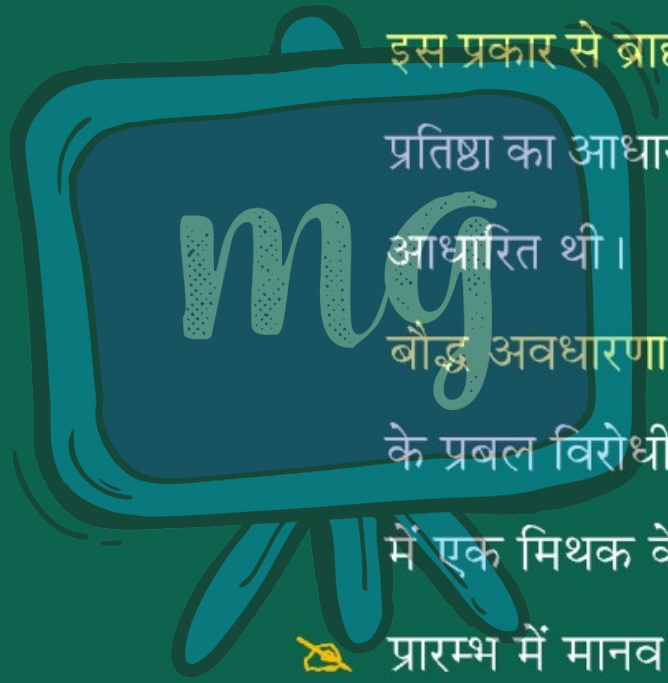

इस प्रकार से ब्राह्माणीय – परंपरा के अनुसार सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार जन्म था। क्योंकि वर्ण व्यवसाय जन्म आधारित थी।

बौद्ध अवधारणा – बौद्ध जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था के प्रबल विरोधी थे। बौद्ध ग्रंथ सुत्त पिटक नामक ग्रंथ में एक मिथक के अनुसार –

- प्रारम्भ में मानव विकसित नहीं थे। वनस्पति जगत भी अविकसित था। सभी जीव शांति से निर्बाध लोक में रहते थे और प्रकृति से उतना ही ग्रहण करते थे जितनी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

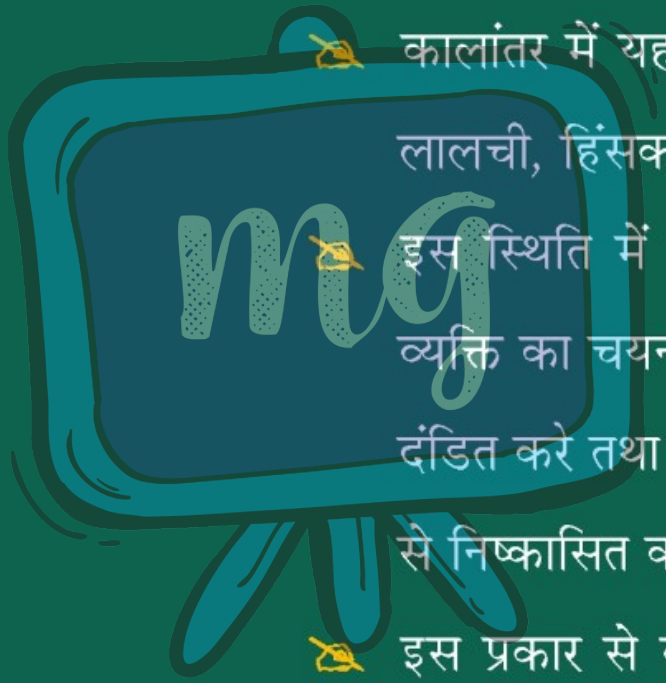

- कालांतर में यह व्यवस्था पतनशील हुई तथा मनुष्य लालची, हिंसक तथा कपटी हो गये।
- इस स्थिति में उनहोंने विचार किया कि एक ऐसे व्यक्ति का चयन करें जो न्यायप्रिय हो, अपराधी को दंडित करे तथा निष्कासित किये जाने वाले को राज्य से निष्कासित करे।
- इस प्रकार से बौद्ध अवधारणा सामाजिक व्यवस्था को दैविक व्यवस्था नहीं मानती है।
- बौद्धों ने जन्म आधारित प्रतिष्ठा को अस्वीकार किया

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

5. निम्नलिखित अवतरण महाभारत से हे जिसमें ज्येष्ठ पांडव युधिष्ठिर दूत संजय को संबोधित कर रहे हैं :

संजय धृतराष्ट्र गृह के सभी ब्राह्मणों और मुख्य पुरोहित को मेरा विनीत अभिवादन दीजियेगा। मैं गुरू द्रोण के सामने नतमस्तक होता हूं.... मैं कृपाचार्य के चरण स्पर्श करता हूं.... (और) कुरू वंश के प्रधान भीष्म के।

मैं वृद्ध राजा (धृतराष्ट्र) को नमन करता हूं। मैं उनके पुत्र दुर्योधन ओर उनके अनुजों के स्वास्थ्य के बारे में पूछता हूं तथा उनको शुभकामनाऐं देता हूं... मैं उन

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

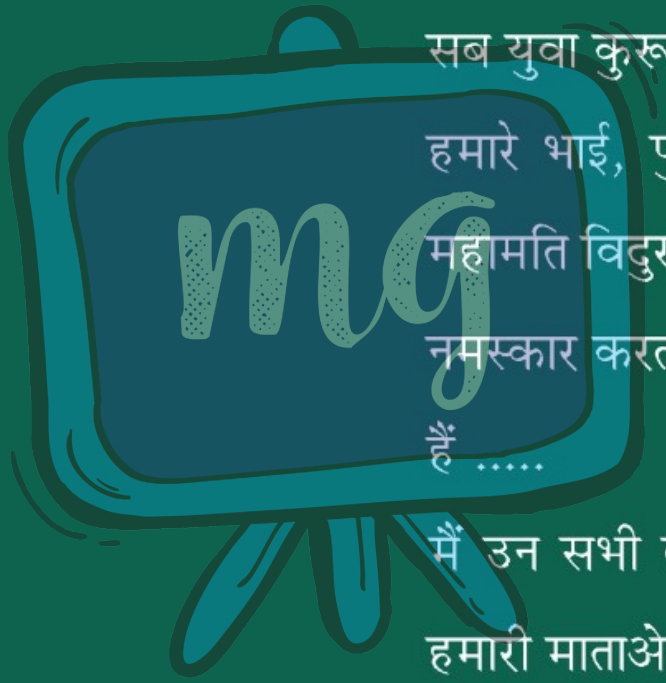

सब युवा कुरू योद्धाओं का अभिनन्दन करता हूं जो हमारे भाई, पुत्र और पौत्र हैं ... सर्वोपरि मैं उन महामति विदुर को (जिनका जन्म दासी से हुआ है) नमस्कार करता हूं जो हमारे पिता व माता के सदृश हैं .....

मैं उन सभी वृद्धा स्त्रियों को प्रणाम करता हूं जो हमारी माताओं के रूप में जानी जाती हैं। जो हमारी पत्नियां हैं, उनसे यह कहियेगा कि ''मैं आशा करता हूं कि वे सुरक्षित हैं'' मेरी ओर से उन कुलवधुओं

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

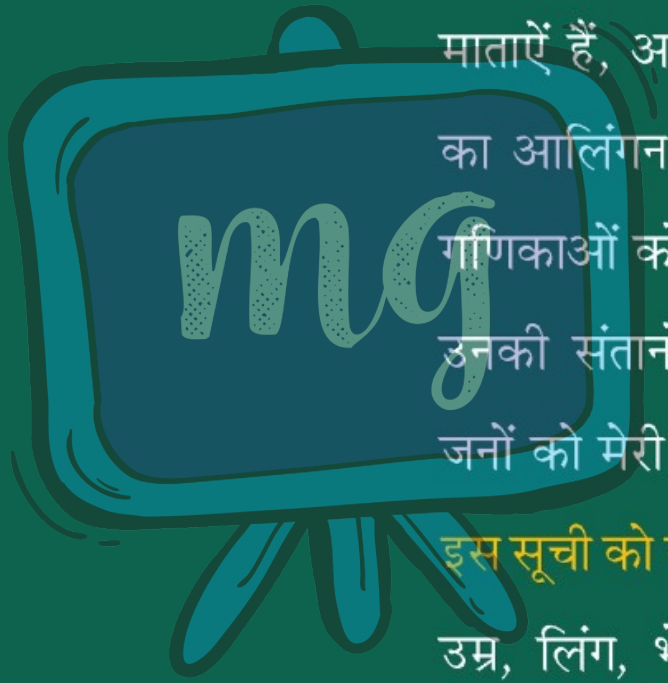

माताऐं हैं, अभिनन्दन कीजियेगा तथा हमारी पुत्रियों का आलिंगन कीजियेगा.. सुंदर, सुगंधित, सुवेशित गणिकाओं को शुभकामनाऐं दीजिऐगा। दासियों और उनकी संतानों तथा वृद्ध, विकलांग और असहाय जनों को मेरी ओर से नमस्कार कीजियेगा..... ।

इस सूची को बनाने के आधारों की पहचान कीजिए....

उम्र, लिंग, भेद व बंधुत्व के संदर्भ में। क्या कोई अन्य आधार भी है? प्रत्येक श्रेणी के लिए स्पष्ट कीजिए कि सूची में उन्हें एक विशेष स्थान पर क्यों

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

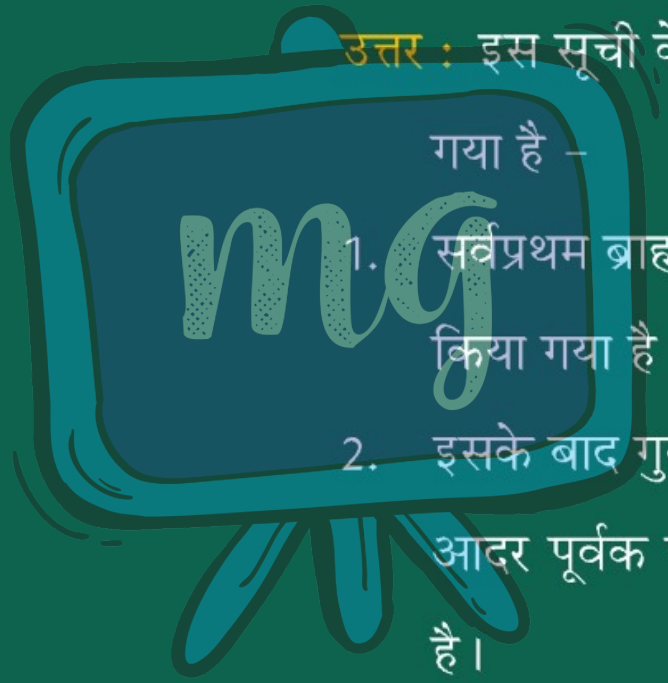

उत्तर : इस सूची के निर्माण में निम्न बातों का ध्यान रखा गया है –

1. सर्वप्रथम ब्राह्मणों एवं मुख्य–पुरोहित का अभिवादन किया गया है।
2. इसके बाद गुरूओं – गुरू द्रोण व कृपाचार्य के प्रति आदर पूर्वक नत–मस्तक व चरण स्पर्श किया गया है।
3. अब ब्राह्मणों के पश्चात् कुरू वंश के प्रधान व उम्र में सबसे बड़े भीष्म पितामह का सम्मान किया गया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

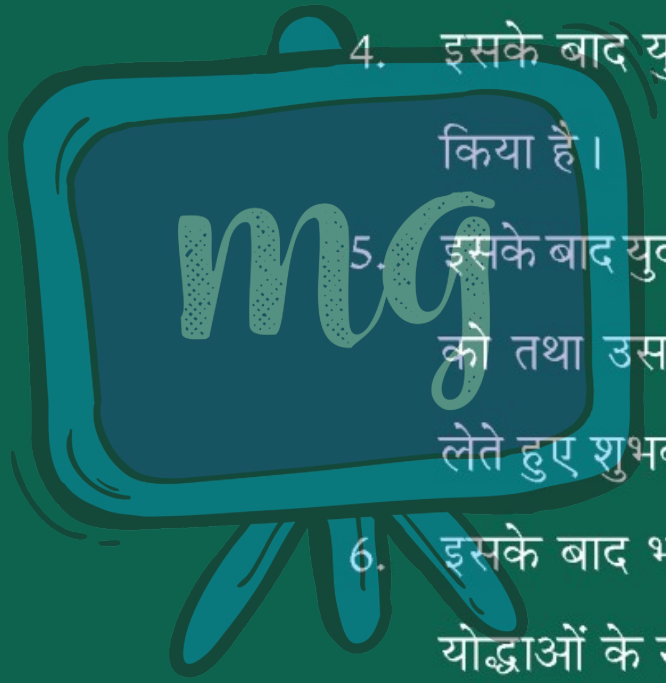

4. इसके बाद युधिष्ठिर ने वृद्ध राजा धृतराष्ट्र को नमन किया है।
5. इसके बाद युवराज का स्थान प्रमुख मानते हुए दुर्योधन को तथा उसके अनुजों के स्वास्थ्य की जानकारी लेते हुए शुभकामनाऐं दी हैं।
6. इसके बाद भाई, पुत्र और पौत्रों को को युवा कुरू योद्धाओं के रूप में अभिनन्दन किया गया है।
7. इसके बाद महामति-विदुर का अभिनंदन करते हुए नमस्कार किया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

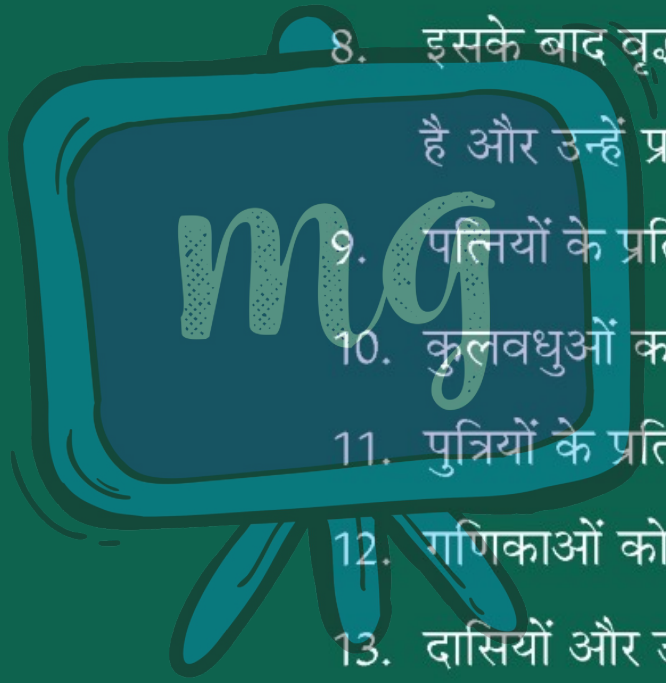

8. इसके बाद वृद्धा स्त्रियों के प्रति सम्मान प्रकट किया है और उन्हें प्रणाम किया है।
9. पत्नियों के प्रति सुरक्षित होने की कामना की गई है।
10. कुलवधुओं का अभिनन्दन किया गया है।
11. पुत्रियों के प्रति अपना स्नेह प्रकट किया है।
12. गणिकाओं को शुभ कामनाऐं दी हैं।
13. दासियों और उनकी संतानों तथा वृद्ध, विकलांगों व असहाय जनों का ध्यान रखते हुए उनको भी नमस्कार किया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

6. भारतीय साहित्य के प्रसिद्ध इतिहासकार मौरिस विंटरविट्ज ने महाभारत के बारे में लिखा था कि : ''चूंकि महाभारत सम्पूर्ण साहित्य का प्रतिनिधित्व करता है .... बहुत सारी और अनेक प्रकार की चीजें इसमें निहित हैं .....(वह) भारतीयों की आत्मा की अगाध गहराई को एक अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है।'' चर्चा कीजिए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

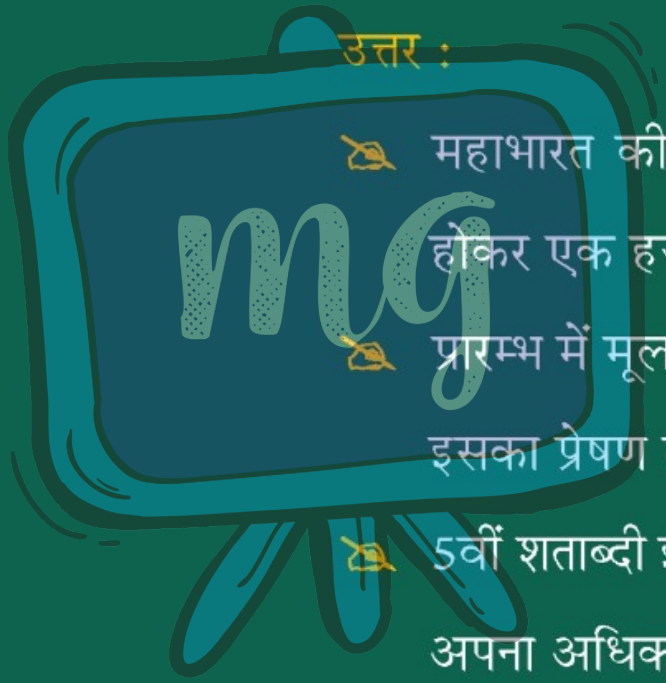

उत्तर :

- महाभारत की रचना लगभग 500 ई.पू. से प्रारम्भ होकर एक हजार वर्षों तक चलती रही।
- प्रारम्भ में मूल कथा के रचयिता भाट-सारथी थे तथा इसका प्रेषण मौखिक रूप से होता रहा।
- 5वीं शताब्दी ई.पू. से ब्राह्मणों ने इस कथा परंपरा पर अपना अधिकार कर लिया और इसे लिखा।
- 200 ई. पू.-200 ई. के बीच जब विष्णु देवता की आराधना प्रभावी हो रही थी तब इसके महत्वपूर्ण

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- 200–400 ई. के बीच मनुस्मृति से वृहत् उपदेशात्मक प्रकरण महाभारत में जोड़े गये।
- इस सब परिवर्धनों के कारण यह ग्रंथ जो प्राथमिक रूप में 10000 से भी कम श्लोकों का था बढ़कर 1 लाख श्लोकों का हो गया।
- साहित्यिक परंपरा में इस वृहत रचना के रचयिता ऋषिव्यास को ही माना गया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

इसकी विशेषताओं को देखते हैं :-

1. भाषा :- इस महाकाव्य का मूल पाठ संस्कृत में है लेकिन इसकी संस्कृत वेदों व प्रशस्तियों की संस्कृत सरल है।
2. विषयवस्तु :- इतिहासकार महाभारत की विषयवस्तु को 2 शीर्षकों में रखते हैं -

(i) आख्यान : कहानियों का संग्रह है।

(ii) उपदेशात्मक : सामाजिक आचार-विचारों के मानदंडों का चित्रण है।

इतिहासकारों का मानना है कि महाभारत प्रारम्भ में एक नाटकीय कथानक था जिसमें उपदेशात्मक अंश बाद में

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

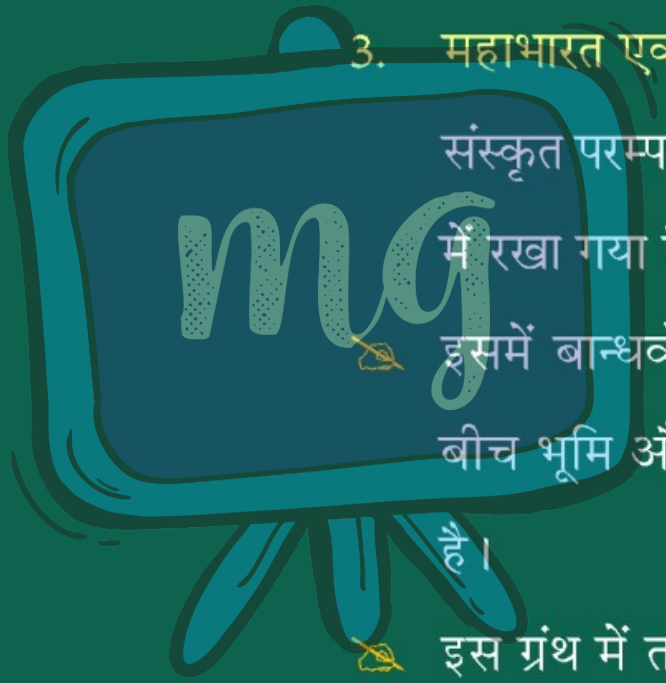

3. महाभारत एक 'इतिहास' या ऐतिहासिक ग्रंथ :-

संस्कृत परम्परा में महाभारत को 'इतिहास' की श्रेणी में रखा गया है।

- इसमें बान्धवों के दो दलों कौरवों एवं पांडवों के बीच भूमि और सत्ता को लेकर हुए युद्ध का वर्णन है।
- इस ग्रंथ में तत्कालीन धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक अवस्थाओं का पूर्ण विवरण है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

4. भारतीय ज्ञान का विश्व कोष :- महाभारत के आदिपर्वन को धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र, नीतिशास्त्र तथा मोक्षशास्त्र कहा गया है।

5. महाभारत एक 'नीतिबोध' :- भीष्म का राजनीति एवं धर्म के विभिन्न पक्षों पर लम्बा प्रवचन है। विदुर का भी नीति कारकों में महत्वपूर्ण स्थान है।

6. महाभारत कालीन समाज :- वर्ण व्यवस्था सुदृढ़ थी तथा वर्ण 4 थे - (i) ब्राह्मण (ii) क्षत्रिय (iii) वैश्य (iv) शूद्र

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

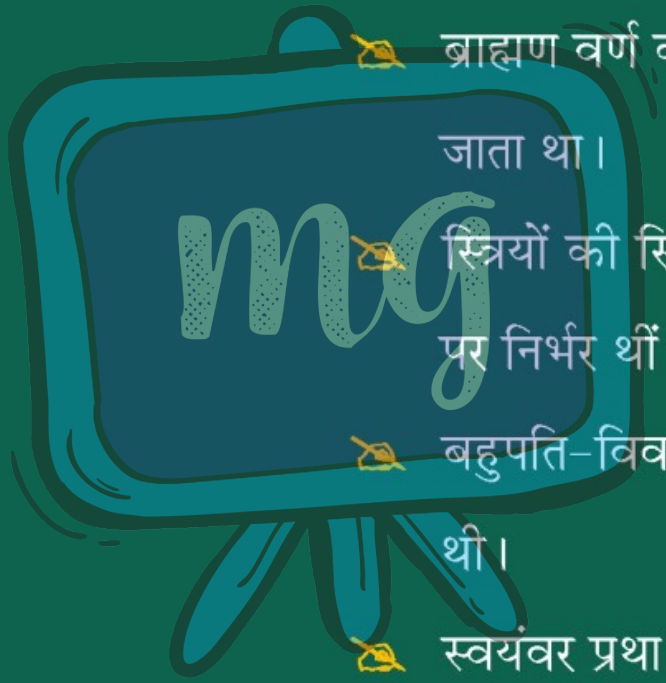

- ब्राह्मण वर्ण को सर्वश्रेष्ठ तथा शूद्रों को निम्नतर माना जाता था।
- स्त्रियों की स्थिति अधिक उच्च नहीं थी। वे पुरूषों पर निर्भर थीं।
- बहुपति-विवाह तथा बहुपत्नी विवाह पद्धति प्रचलित थी।
- स्वयंवर प्रथा भी प्रचलित थी।
- निम्न वर्ग के लोगों को (जैसे - निषाद) शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

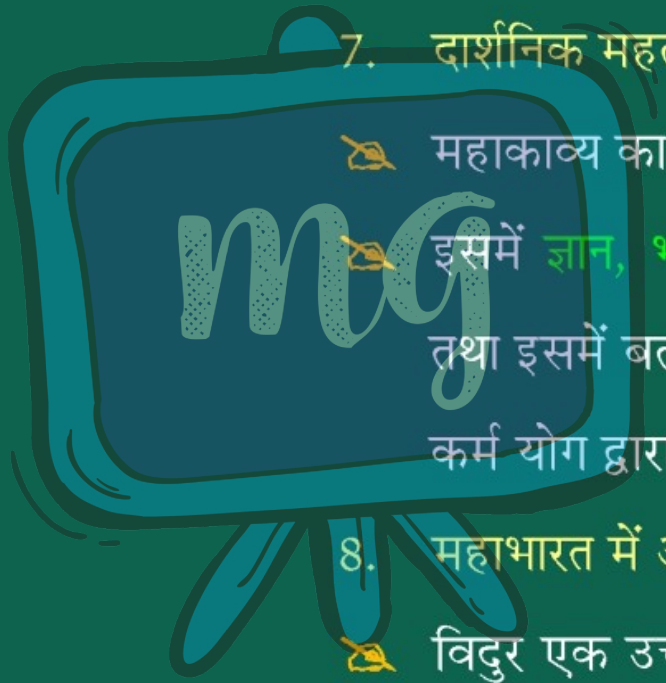

7. दार्शनिक महत्व :-

- महाकाव्य का उपदेशात्मक अंश 'भगवत गीता' है।
- इसमें ज्ञान, भक्ति तथा कर्म का सुंदर समन्वय है तथा इसमें बताया है कि ज्ञान योग, भक्ति योग तथा कर्म योग द्वारा ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

8. महाभारत में आदर्श :-

- विदुर एक उच्च कोटि के विद्वान थे वे धृतराष्ट्र को नीतिशास्त्र एवं धर्मशास्त्र की सलाह देते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

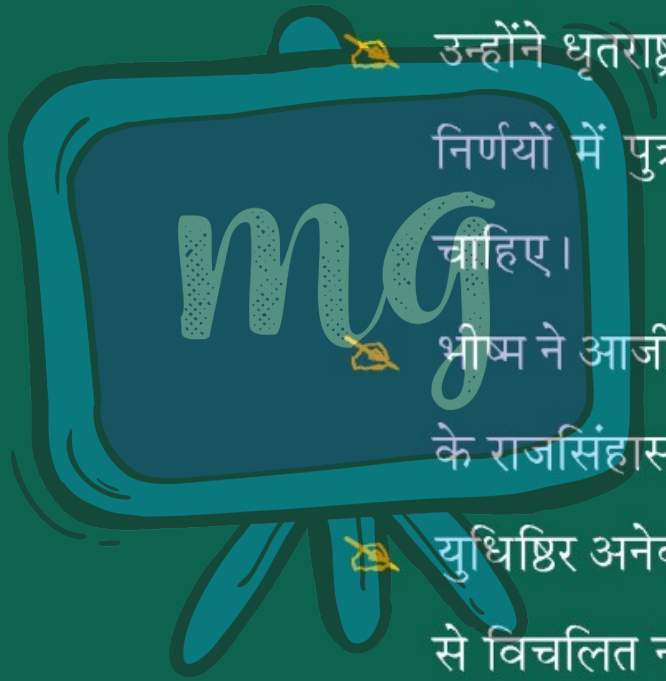

- उन्होंने धृतराष्ट्र से कहा था कि राजा होते हुए उनके निर्णयों में पुत्र की महत्वाकांक्षाऐं आड़े नहीं आनी चाहिए।
- भीष्म ने आजीवन अपना वचन निभाते हुए हस्तिनापुर के राजसिंहासन से बंधे रहे।
- युधिष्ठिर अनेक कष्ट सहन करते हुए भी धर्म के मार्ग से विचलित नहीं हुए और वे धर्मराज कहलाये।
- पांडवों का माता-पिता, गुरूओं, ब्राह्मणों, वृद्धों, असहायों के प्रति प्रेम एवं आदर भी आदर्श सूचक

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

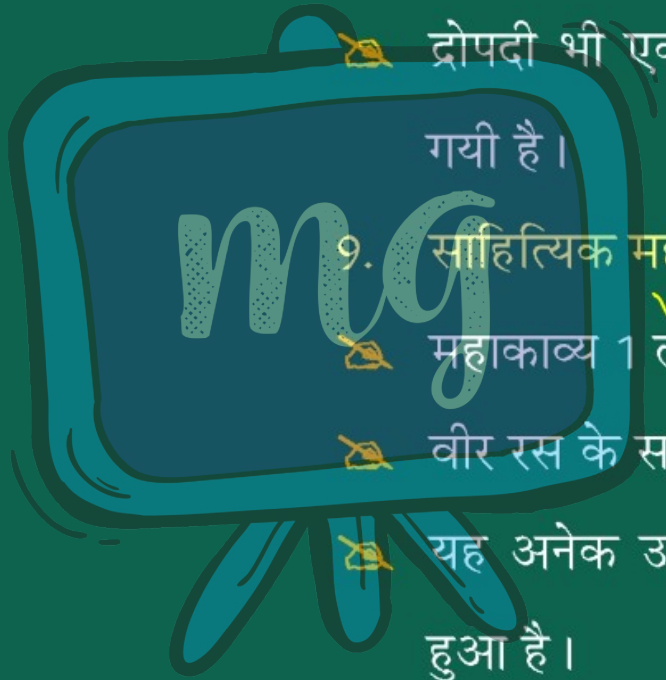

- द्रोपदी भी एक आदर्श नारी के रूप में चित्रित की गयी है।

9. साहित्यिक महत्व :-

- महाकाव्य 1 लाख श्लोकों वाला प्राचीनतम ग्रंथ है।
- वीर रस के साथ साथ श्रंगार रस भी मिलते हैं।
- यह अनेक उपमाओं, अलंकारों एवं छन्दों से भरा हुआ है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

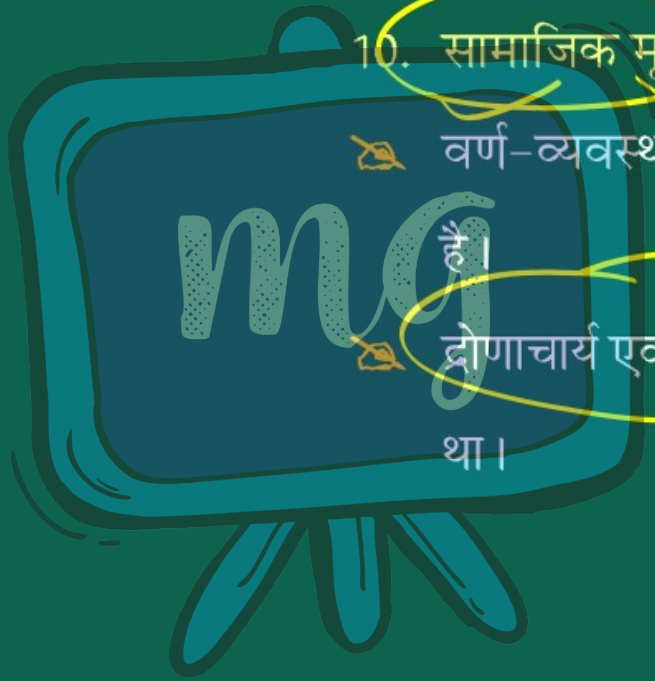

10. सामाजिक मूल्य :-

- वर्ण-व्यवस्था के साथ साथ कर्म भी प्रधान माना गया है।
- द्रोणाचार्य एवं कृपाचार्य में जन्मजात वर्ण का भी महत्व था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

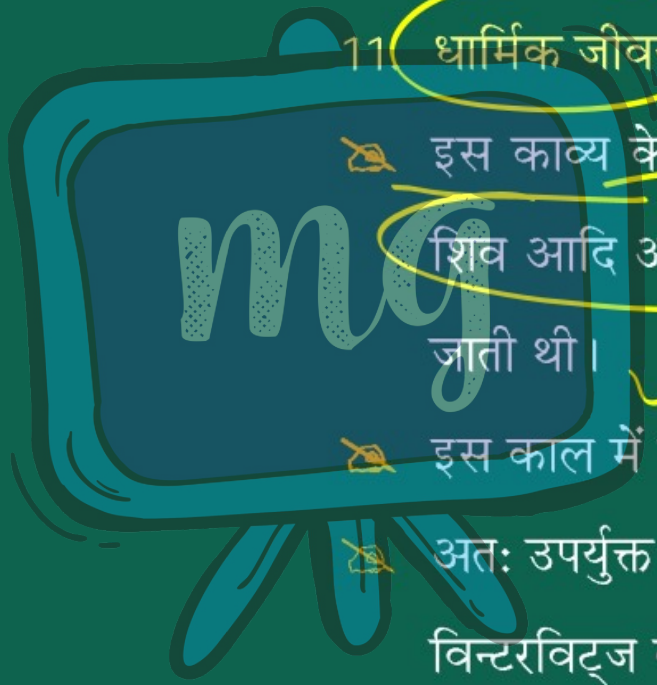

11. धार्मिक जीवन :-

- इस काव्य के अनुसार इस काल में विष्णु, ब्रह्मा, शिव आदि अनेक देवी-देवताओं की उपासना की जाती थी।
- इस काल में यज्ञ, अनुष्ठानों का महत्व था।
- अतः उपर्युक्त वर्णन से यह प्रतीत होता है कि मौरिस-विन्टरविट्ज का कथन सही है कि

''महाभारत सम्पूर्ण साहित्य का प्रतिनिधित्व करता है।''

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

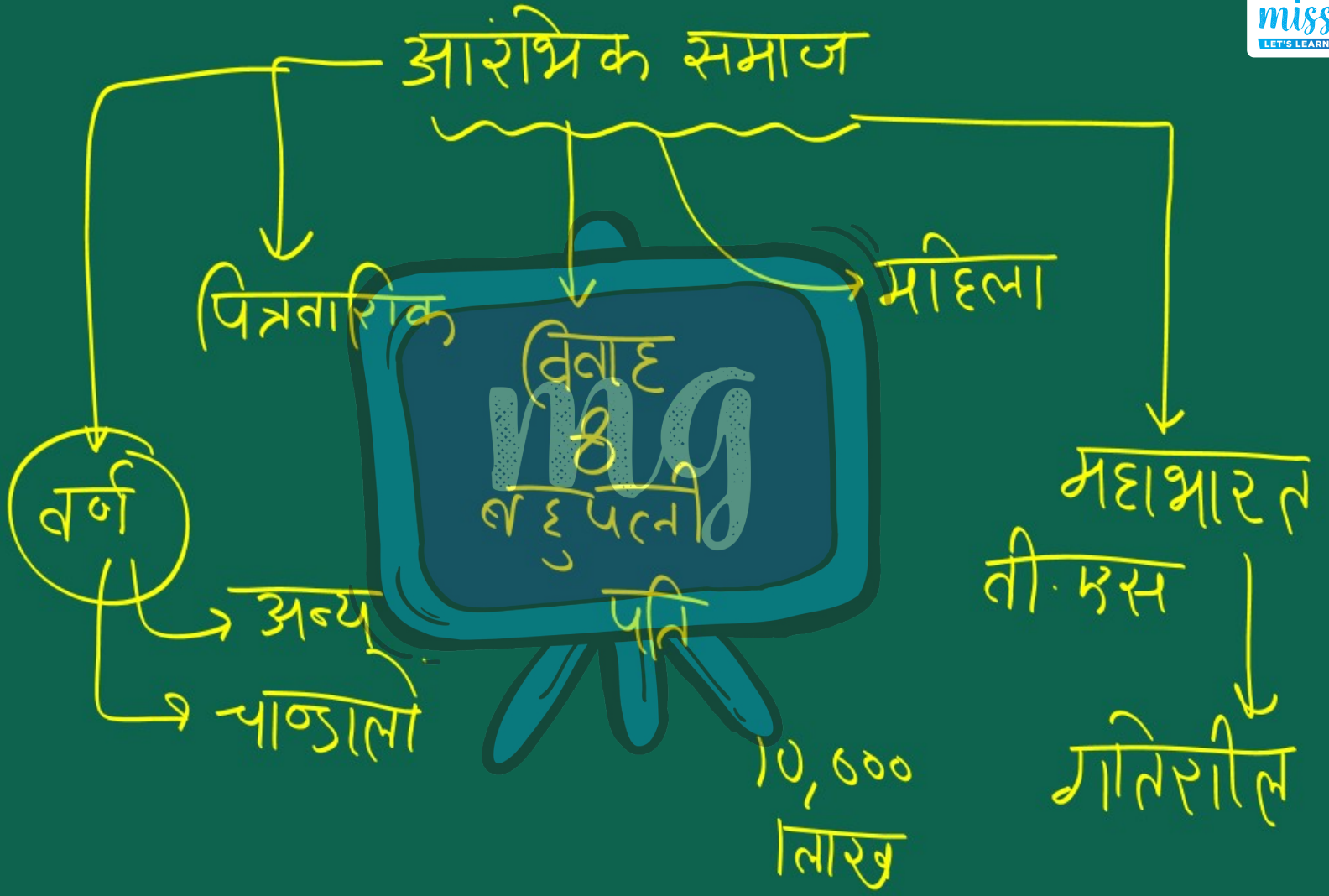

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q महाभारत का समलोचनात्मक वर्णन ? / गतिशील ? / लेखक

Q. सामाजिक विषमताओं ?

Q. विवाद / पितृतांत्रिक / महिला

Q. महाभारत लेख



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अंतर

लेरव

विशेषता / +ve -ve

